ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–१००
दिनांक- शुक्रवार, ३१ दिसम्बर, २०२१

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 21.0 एवं 12.3 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 94 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 71 प्रतिशत, हवा की औसत गति 2.1 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 0.6 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 3.8 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 15.6 एवं दोपहर में 22.3 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(01–05 जनवरी, 2022)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 01–05 जनवरी, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- इस अवधि उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल छाये रह सकते है तथा मौसम शुष्क रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पक्षिमी विछोभ के प्रभाव तथा पछिया हवा चलने के कारण ठण्ड के प्रकोप में वृद्धि हो सकती है। उत्तर पश्चिम बिहार के जिलों में न्यूनतम तापमान अन्य जिलों के तुलना में 1–2 डिग्री सेल्सियस कम रह सकता है। मैदानी भागो के जिलों में अधिकतम तापमान 19–21 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 7–8 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है। जबकि तराई तथा उत्तर पश्चिम बिहार के जिलों में अधिकतम तापमान 17–19 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 6–8 डिग्री सेल्सियस के बीच आ सकता है। अधिक नमी तथा सामान्य से कम तापमान के प्रभाव से अधिकांश स्थानों में मध्यम से घने कुहासे छा सकते है।
- औसतन 9–10 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 60 से 70 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 40 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- आलू में नियमित रुप से झुलसा रोग की निगरानी करें। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व शिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पुरा पौधा झुलस जाता है। पत्ती पर भुरे रंग के जलीय धब्बे बनते है। कभी-कभी भुरे व काले धब्बे तने पर दिखाई देते है जिससे कंद भी प्रभावित होते है। इस रोग के लक्षण दिखने पर डाई-इथेन एम० ४५ फफूँदनाशक दवा का २ किलोग्राम १००० लीटर पानी में घोल कर प्रति हेक्टेयर की दर से २-३ छिड़काव १० दिनों के अन्तराल पर करें। आलू में कजरा पिल्लू दिखने पर फसल में क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० का २.५ लीटर १००० लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। दोनों दवाओं को मिलाकर किसान भाई छिड़काव कर सकते है। पिछात आलू में प्रति हेक्टेयर ७५ किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें।
- नवम्बर माह के शुरु में बोयी गई रबी मक्का की फसल जो ५० से ६० दिनों की अवस्था में है। इन फसलों में ५० किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार कर मिट्टी चढ़ावें। मक्का की फसल में तना बेधक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुँच जाती है। तने के गुदे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। जिससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधें को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुचाती है। उपचार हेतु फसल में फोरेट १० जी० या कार्बोफ्यूरान ३ जी० का ७-८ दाना प्रति गाभा प्रति पौधा दें। फसल में अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथ्रिन २५०-३०० मि०ली० प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- बिलम्ब से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो २१ से २५ दिनों की हों गयी हो ३० किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। गेहूँ की बुआई के ३० से ३५ दिनों के बाद की अवस्था जिसमें (पहली सिंचाई के बाद) गेहूँ की फसल में कई प्रकार के खर-पतवार उग आते है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है। जिससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रन हेतु सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्राम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्राम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पर छिड़काव करें।
- पिछात मटर में निकाई-गुराई करें। फसल में फली छेदक कीट की निगराणी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियाँ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाश फंदा का उपयोग करें। १५-२० टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास २५ ई० सी० या नोवाल्युरॉन १० ई० सी० का १ मि० ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- रबी प्याज की रोपाई प्राथमिकता से करें। पाँक्ति से पाँक्ति की दुरी १५ से०मी० तथा पौध से पौध की दुरी १० से०मी० पर करे। पौध की रोपाई अधिक गहराई में नहीं करें। अगात रोपी गई प्याज में निकौनी करे। लहसुन की फसल में निकौनी एवं कीट-व्याधि की निगरानी करें।
- सब्जियों में निकाई-गुड़ाई करें। बैगन की फसल को तना एवं फल छेदक कीट की निगरानी करें। फसल में कीट का प्रकोप दिखने पर रोकथाम हेतु सर्वप्रथम ग्रसित तना एवं फलो को इकठा कर नष्ट कर दें तथा फसल में स्पिनोसेड ४८ ई०सी०/ १.० मि०ली० प्रति ४ ली० पानी की दर से छिड़काव करे। कीटनाशक दवा के तैयार घोल में गोंद १.० मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से अवश्य मिलावें।

आज का अधिकतम तापमानः 20.4 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.2 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 11.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.3 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी